शहरी एवं ग्रामीण क्षैत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता एवं शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

शिक्षा शास्त्र में पी.एच.डी. की उपाधि हेतु

शोध प्रारुप

निर्देशक
डॉ0 मधुप कुमार पटेल

शोधार्थी
बिन्दु भारती

शिक्षा शाास्त्र संकाय

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर

2020

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पेज नं.
1	प्रस्तावना	1
2	समस्या कथन	3
3	अध्ययन की आवश्यकता	3
4	शोध अध्ययन के उद्धेश्य	5
5	शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ	6
6	शोध में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण	7
7	परिसीमांकन	11
8	शोध में न्यादर्श	12
9	शोध उपकरण (प्रश्नावली)	12
10	सांख्यिकी विधियां	13
11	सन्दर्भ ग्रन्थ सूची	13

1. प्रस्तावना –

शिक्षा मानव जीवन की आधारशिला है जो समाज में रहने वाले व्यक्तियों को श्रेष्ठता तथा उन्नति प्रदान करता है । यह एक सतत् प्रक्रिया है जिसका अमृत ही मानव को इस नश्वर संसार में अमरत्व प्रदान करता है । शिक्षा ही व्यक्ति का चहुँमुखी विकास करती है । समस्त विश्व का विकास शिक्षा पर निर्भर करता है । शिक्षा मनुष्य के जीवन का आधार स्तंभ है ।

शिक्षा ही वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा निरुपाय और पर–निर्भर मानव सब प्रकार से विकसित होकर समाज में उपयुक्त स्थान ग्रहण करता है । शिक्षा के माध्यम से ही वह अपने समाज की संस्कृति को ग्रहण करता है । शिक्षा के द्वारा उसका सामाजिक, मानसिक, शारीरिक, सौन्दर्यात्मक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास होता है । शिक्षा के द्वारा ही उसके चरित्र का निर्माण होता है और वह आत्म–विकास के पथ पर अग्रसर होता है ।

आज शिक्षा का केन्द्र बिन्दु बालक है । अतः आज की शिक्षा का लक्ष्य बालक का सर्वांगीण विकास करना तथा बालक के समायोजन में जो बाधाएँ आती है उनके समाधान में सहयोग देना है ।

प्रत्येक समाज की अपनी संस्कृति, मूल्य, परंपराएँ तथा मापदण्ड होते हैं । सामाजिक प्रधि के रुप में हम बपने परिवेश में समायोजित होने का प्रयास करते हैं ।

समायोजन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें मानसिक एवं व्यावहारिक दोनों प्रकार के प्रत्युत्तर निहित है । इनके द्वारा व्यक्ति अभाव, तनाव, भग्नाशा आदि को व्यक्त करता है तथा आंतरिक अंगों एवं बाह्य परिस्थितियों के मध्य सामंजस्य स्थापित करता है । यह

सामंजस्य स्थापना ही समायोजन है । अब व्यक्ति कोई आवश्यकता का अनुभव करता है तथा उसकी संतुष्टि के लिए प्रयास करता है तब उसके अन्दर एक प्रकार के तनाव की स्थिति बनी रहती है । आवश्यकता पूर्ति की राह में अनेक बाधाएँ भी आती है । इन बाधाओं का निरन्तर सामना करने से व्यक्ति को असंतोष यज्ञ हताशा होती है । इस मानसिक तनाव तथा हताशा से मुक्त होने के लिए व्यक्ति प्रयास करता है । यदि व्यक्ति के प्रयास सही एवं रचनात्मक होते है तो वह तनाव एवं असंतोष से मुक्त हो जाता है तथा जीवन में समायोजित रहता है । इसके विपरित यदि वह अपने प्रयासों द्वारा तनाव एवं असंतोष से मुक्त नही हो पाता तो नह जीवन में कुसमायोजित रहता है ।

आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में जहां शिक्षा के हर क्षैत्र में कदम–कदम पर प्रतिस्पर्धा है, वहीं प्रत्येक अभिभावक यह चाहते हैं कि उनके बच्चे के व्यक्तित्व एवं ज्ञान का चहुंमुखी विकास हो और इसके लिए आवश्यक है कि कि विद्यालय का अधिगम वातावरण स्वच्छ एवं अधिगम के अनुकूल हो । जिससे विद्यार्थी इस वातावरण में रहकर ज्ञान प्राप्त कर सके क्योंकि अधिगम वातावरण का बालकों की शैक्षिक उपलब्धि पर गहरा प्रभाव पड़ता है ।

समस्याएं मानसिक तनाव उत्पन्न करती है यदि तनाव बना रहता है तो उस वातावरण में असमायोजित व्यक्ति और समायोजित दोनों के लिए घातक बना रहता है । प्रत्येक विद्यालय में कुछ ऐसे विद्यार्थी होते हैं जो भावनात्मक, सामाजिक तथा शैक्षणिक समस्याओं से ग्रसित रहते हैं । ये समस्याएं उनके समायोजन एवं शैक्षिक निष्पत्ति तथा व्यक्तिगत जीवन पर गहरा प्रभाव डालती है । इन समस्याओं के कारण छात्र अध्ययन में कठिनाई अनुभव करते हैं । कुछ विद्यार्थी अपने अध्यापकों एवं मित्रों के साथ समायोजन कर अपनी समस्या हल कर लेते हैं, जबकि कुछ समायोजन नही कर पाते हैं । इनमें कुछ विद्यार्थी शहरी क्षैत्र के होते हैं तो कुछ ग्रामीण क्षैत्र के होते हैं । उनकी समायोजन क्षमता में भी अन्तर पाया

जाता है । कुछ राजकीय विद्यालयों के होते हैं तो कुछ निजी विद्यालय में अध्ययन करते हैं । इन सभी विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता में भी अन्तर पाया जाता है । अपने को समायोजित करने में कंई बाधाओं का सामना करना पड़ता है । उनकी क्षमता का शैक्षिक निष्पत्ति पर भी प्रभाव पड़ता है ।

प्रस्तुत शोध में विद्यार्थी को समायोजित होने में क्या–क्या बाधाएं आती है ? कुछ विद्यार्थी शहरी एवं कुछ ग्रामीण क्षैत्र से होते हैं । इन सब प्रश्नों का उत्तर खोजना व उन सभी कारणों का अभी शैक्षिक निष्पत्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है ? आदि प्रश्न शोधकर्ता ने खोजने के अथक प्रयास किए है । अतः प्रस्तुत शोध में इन सब बातों का उजागर किया जाना ही ध्येय है ।

2. समस्या कथन –

समस्या कथन एक ऐसा वाक्य है जिससे यह ज्ञात करने का प्रयास किया जाता है कि दो या दो से अधिक चरों के मध्य किस प्रकार का सम्बन्ध है । अनुसंधान के अन्तर्गत उपरोक्त कथन का उत्तर प्राप्त किया जा सकता है ।

कार्टर बी.गुड्स के अनुसार – "नियमानुसार किया शोध प्रबन्ध का शीर्षक केवल उस अनुसंधान में प्रयुक्त किए गए विशिष्ट क्षैत्र केवल नाम प्रदत्त करना है ।

अतः किसी भी अनुसंधान कार्य के लिए एक समस्या कथन अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है । समस्या का अभिकथन एक सुस्पष्ट लक्ष्य दृष्टि केन्द्रित करना है । उपर्युक्तानुसार अनुसंधानकर्ता ने वर्तमान शोध समस्या का कथन निम्नानुसार दिया है –

उच्च शहरी एवं ग्रामीण क्षैत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता का शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

3. अध्ययन की आवश्यकता –

किसी भी शाोध का औचित्य शोध समस्या की उपादेयता को निश्चित करता है । विशेष रुप से विद्यार्थियों की गतिविधियों के प्रभावी

प्रबन्धन की दृष्टि से दक्षताएं विकसित होनी चाहिए । सामाजिक व्यवहार की दृष्टि से छात्र एवं छात्रा में अलग–अलग प्रारुप सामने आते हैं । अनुभव के आधार पर उनमें सुधार आता है । यह भी एक प्रश्न है कि छात्र एवं छात्रा में सीखने में क्या कोई अन्तर है अथवा नही ।

एक अच्छे राष्ट्र का निर्माण उस राष्ट्र के छात्रों पर निर्भर करता है क्योंकि छात्र ही राष्ट्र के भविष्य का निर्माण करते हैं और यदि छात्र योग्य होंगे तो ही राष्ट्र प्रगति के पथ पर अग्रसर हो सकेगा । छात्र को अच्छी शिक्षा ग्रहण करने के लिए उसे वातावरण में समायोजित होना अत्यंत आवश्यक है । बिना समायोजन के छात्र वांछित शिक्षा को ग्रहण कर पाने में असमर्थ रहेगा । बालक ही शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रभाव पड़ता है । आज अनुशासनहीनता, आलस्यपन, कमजोरी, संवाभाव का अभाव तथा भ्रष्टाचार ये सब हमारे राष्ट्रीय जीवन के अभिशाप बन रहे हैं जो एक बड़ी सीमा तक हमारी शैक्षिक निष्पत्ति पर ही केन्द्रित है । शैक्षिक निष्पत्ति बालक के समायोजन को प्रत्यक्ष रुप से प्रभावित करती है । इस अध्ययन का औचित्य निम्न दृष्टिकोणों से उपयोगी हो सकता है –

(1) शिक्षा विभाग की दृष्टि से –

प्रस्तुत शोध के निष्कर्षों के आधार पर शिक्षा विभाग उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अपने सुझाव प्रस्तुत कर सकेगा । इस प्रकार की नीति बनायेगा जो ाहरी एवं ग्रामीण क्षैत्र के विद्यार्थियों के हित में हो ।

(2) विद्यालय विभाग की दृष्टि से –

प्रस्तुत शोध अध्ययन के आधार पर विद्यालय शिक्षा विभाग से प्राप्त सुझावों, योजना तथा नीतियों का सर्वोत्तम क्रियान्वयन कर सकेगा व उचित वातावरण तैयार कर सकेगा ।

(3) अध्यापकों की दृष्टि से –

प्रस्तुत शोध अध्ययन के आधार पर अध्यापकों को सक्रिय होना पड़ेगा । अध्यापक विद्यार्थियों को हर परिस्थितियों से निपटने में तैयार कर सकेगा ।

(4) अभिभावक दृष्टि से –

शोध अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर अभिभावक बच्चों के अनुकुल वातावरण तैयार कर सकेंगे ।

शोध अध्ययन के उद्धेश्य :–

(1) उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की समायोजन क्षमता एवं उनकी शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

(2) उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की समायोजन क्षमता एवं उनकी शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

(3) उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की समायोजन क्षमता एवं उनकी शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

(4) उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की समायोजन क्षमता एवं उनकी शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

5. शोध परिकल्पनाएँ :–

(1) शहरी एवं ग्रामीण क्षैत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नही होता है ।

(2) शहरी एवं ग्रामीण क्षैत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नही होता है ।

(3) शहरी एवं ग्रामीण क्षैत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही होता है ।

(4) शहरी एवं ग्रामीण क्षैत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही होता है ।

6. शोध में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण :–

किसी भी शोध हेतु यह आवश्यक है कि समस्या का स्पष्टीकरण कैसे किया जाए ? इस हेतु शोधकर्ता द्वारा समस्या में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण किया जाता है । वर्तमान शोध अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा निम्नलिखित शब्दों का परिभाषीकरण किया गया है –

1. विद्यालय –

अंग्रेजी में विद्यालय के लिए SCHOOL शब्द का प्रयोग किया जाता है । यह शब्द यूनानी भाषा के SCHOLA शब्द से बना है । यूनानी भाषा में 'स्कोला' शब्द का प्रयोग अवकाश के लिए किया जाता है । साधारण रुप में विद्यालय का अर्थ विद्या आलय या 'विद्या का घर ' से है।

अतः विद्यालय का शाला से आशय उस संस्था से है जहॉ पर देश या समाज की नई पीढ़ी को उसकी योग्यता, क्षमता व बुद्धि के अनुसार निश्चित विधि व प्रक्रिया से सुप्रशिक्षित आचार्यों, शिक्षकों द्वारा उस राष्ट्र के विज्ञान, कला–कौशल, णर्म, नैतिकता, दर्शन उसकी सांस्कृतिक विरासत का ज्ञान करवाया जाता है तथा उन्हे अपने जीवन में उतारनक के तरीके सीखाये जाते हैं ।

2. उच्च माध्यमिक विद्यालय –

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 – द्वारा विद्यालयी शिक्षण स्तर की प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिकतथा उच्च माध्यमिक तथा उच्च स्तर में विभक्त किया गया है । इसे निम्न प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है –

प्राथमिक स्तर	–	कक्षा 1–5 तक
उच्च प्राथमिक स्तर	–	कक्षा 6–8 तक
माध्यमिक स्तर	–	कक्षा 9–10 तक
उच्च माध्यमिक स्तर	–	कक्षा 11–12 तक

उच्च माध्यमिक विद्वालय वे विद्यालय है जिनमें कक्षा 1 से 12 तक कक्षाएँ होती है, जबकि कुछ उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा 6 से 12 तक कक्षाएँ होती है । इस प्रकार उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा 6 से 12 एवं 11 व 12 के विद्यालय आते हैं । प्रस्तुत शोध में उच्च माध्यमिक विद्यालयों को सम्मिलित किया गया है । उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में पढ़ाने हेतु अध्यापकों की योग्यता स्नातकोत्तर एवं शिक्षा स्नातक निर्धारित की गई है ।

3. समायोजन –

व्यक्ति की जब स्वाभाविक इच्छा की पूर्ति नही होती तो शनैः–शनैः वह इस अप्रिय स्थिति से समझौता कर लेता है । इसी समझौते को मनोविज्ञान की भाषा में समायोजन कहते है । समायोजन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें मानसिक व व्यावहारिक दोनों ही प्रत्युत्तर निहित है । इनके द्वारा व्यक्ति अभाव, तनाव, भग्नाशा आदि को व्यक्त करता है तथा आन्तरिक अंगों एवं बाह्य परिस्थितियों के मध्य सामंजस्य स्थापित करता है । यह सामंजस्य स्थापना ही समायोजन है ।

व्यक्ति के जीवन में अनेक प्रकार की आवश्यकताएँ होती है । वह इनकी पूर्ति के लिए प्रयास करता है तथा इनकी पूर्ति हो जाने पर व्यक्ति संतुष्ट हो जाता है तथा समायोजित महसूस करता है । इसके

विपरीत यदि व्यक्ति अपने प्रयासयों द्वारा व्यक्ति की आवश्यकता की पूर्ति नही हो पाती है तो वह असन्तोष एवं तनाव से ग्रस्त रहता है तथा तीवन असमायोजित या कुसमायोजित रहता है ।

समायोजन के अर्थ को अधिक स्पष्ट करने के लिए अनेक विद्वानों ने अलग–अलग परिभाषाएं दी है, जिनमें कुछ निम्नलिखित है –

बोरिंग, लैगफेल्ड व वैल्ड – "समायोजन वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा प्राणी अपनी आवश्यकताओं और इन आवश्यकताओं की पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में संतुलन रखता है ।"

स्कीनर – "समायोजन एक अधिगम प्रक्रिया है ।"

गेट्स व अन्य – "समायोजन एक सतत प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने व वातावरण के मध्य सामंजस्यपूर्ण सम्बन्ध के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है ।"

शैफर के मतानुसार– "समायोजन एक प्रक्रिया है जिसमें प्राणी अपनी आवश्यकताओं और इन आवश्यकताओं की पूर्ति की परिथ्स्थतियों में सामंजस्य सीापित करता है ।"

उपरोक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट होता है कि व्यक्ति की आंतरिक आवश्यकताओं व वातावरण की बाह्य मांगों के मध्य संतुलन की स्थिति तक पहुंचना अनिवार्य है । यह एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है ।

4. शैक्षिक–निष्पत्ति –

निष्पत्ति या दक्षता से हमारा अभिप्राय यह है कि किसी क्षेत्र विशेष में कितना व क्या सीखा गया ? कितनी उपलब्धि हासिल की व कितनी कुशलता से

कार्य किया जा सकता है ।

अपने वाली पीढ़ी के समक्ष अध्यापक इस उद्धेश्य से अपने अनुभव एवं मूल्य रखता है कि वे सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा कर सकें एवं उनके व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन हो । बालक विद्यालय में रहकर जो कुछ सीखता है उसे हम उपलब्धि कहते हैं, इस उपलब्धि की जांच के लिए जो परीक्षाएं ली जाती है उन्हे उपलब्धि परीक्षण कहते हैं । किसी कक्षा विशेष में विभिन्न छात्रों ने क्या नया ज्ञान ग्रहण किया वह उसकी शैक्षिक उपलब्धि है, जिसकी जांच शैक्षिक निष्पत्ति परीक्षणों के द्वारा की जाती है । उपलब्धि परीक्षण के द्वारा अध्यापक छात्रों को शिक्षा उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है । शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति विद्यालयों के निश्चित पाठ्यक्रम द्वारा की जाती है । अध्यापक निष्पत्ति परीक्षण द्वारा समय–समय पर यह जानने का प्रयत्न करता है कि कक्षा में दिए हुए ज्ञान को विद्यार्थियों ने कहां तक ग्रहण कर लिया है शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति करने में वह कहां तक सफल रहे हैं ।

विद्यार्थियों की प्रगति ज्ञात करने हेतु उनकी विकसित योग्यताओं का मापन करना आवश्यक होता है । शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु अध्यापक शैक्षिक उपलब्धि द्वारा समय–समय पर यह ज्ञात करता है कि विद्यार्थियों ने कहां तक ज्ञान प्राप्त किया है आदि की जांच करना ही शैक्षिक उपलब्धि कहलाती है शैक्षिक उपलब्धि को और अधिक स्पष्ट करते हुए शिक्षाविदों ने अपने विचार निम्न प्रकार प्रस्तुत किये हैं –

डम्बले – "विद्यार्थी के द्वारा ग्रहण किया गया ज्ञान, कुशलता तथा क्षमता का मापन करने हेतु अपनाई गई विधि/प्रक्रिया व व्यूह रचना उपलब्धि परीक्षण कहलाती है तथा इस परीक्षण के माध्यम से प्राप्त हलों के विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष के अन्तर्गत आते हैं ।"

थार्नडाइक व हेगन – "जब हम उपलब्धि परीक्षण का प्रयोग करते हैं तब हम बात का निश्चय करना चाहते हैं कि एक विशिष्ट प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने के उपरांत व्यक्ति ने क्या सीखा है ।"

फीमेन – "ज्ञान अवबोध कौशल एवं ज्ञानोपयोग को पाठ्यक्रम के आधार पर मापन करने की प्रविधि उपलब्धि परीक्षण कहलाती है । विद्यार्थी ने किसी विषय में कितनी उपलब्धि प्राप्त की है इसका मापन हम शैक्षिक उपलब्धि से कर सकते हैं ।"

शिक्षक एवं विद्यालय का प्रथम दायित्व अपने शिष्यों की उपलब्धि व मूल्यांकन है । शिक्षा के उद्देश्यों में संशोधन एवं परिवर्तनों के साथ–साथ मूल्यांकनों एवं मापन की प्रक्रिया भी बदलती रहती है । उपलब्धि परीक्षण द्वारा बालकों की योग्यता की तुलना की जाती है । इस परीक्षा में हम सापेक्षिक सफलता पर बल देते हैं न कि पूर्ण सफलता पर ।

पाठशालीय कार्य संबंधी सिद्धि को निष्पत्ति के नाम से संबोधित किया जाता है । निष्पत्ति के अंतर्गत अध्यापक तथा अनुसंधानकर्ता इस बात को जानने में समर्थ होता है कि किसी छात्र ने अमुख विषय में कितनी योग्यता प्राप्त की । निष्पत्ति द्वारा विद्यार्थी की किसी एक निश्चित क्षेत्र की निष्पत्ति का बोध होता है न की व्यापक क्षेत्र की जानकारी।

6. परिसीमांकन –

समस्या का स्वरूप अधिक व्यापक होता है । अतः समस्या का व्यवहारिक रूप से अध्ययन करने के लिए सीमांकन करना आवश्यक होता है । इन शोध सीमाओं से शोधकर्ता कासहायता मिलती है । प्रस्तुत शोध अध्ययन को क्षेत्र, विधि, न्यादर्श उपकरण एवं सांख्यिकी आदि से परिसीमित किया गया है जो निम्नलिखित है –

(1) वर्तमान शोध में भीलवाड़ा जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों को लिया जायेगा ।।

(2) वर्तमान शोध में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी एवं निजी उच्च माध्यमिक विद्यालयों को लिया जाना प्रस्तावित है ।

(3) वर्तमान शोध में दो चरों के मापन के लिए मापनी परीक्षण का प्रयोग किया जायेगा ।

(4) वर्तमान शोध अध्ययन में दत्त विशेषण के लिए समुचित सांख्यिकी प्रविधियों को लिया जायेगा ।

8. न्यादर्श –

वर्तमान शोध के न्यादर्श में 600 विद्यार्थियों को शामिल किया गया है । जिसमें 300 शहरी क्षैत्र के विद्यार्थी व 300 ग्रामीण क्षैत्र के विद्यार्थी सम्मिलित किये गये हैं ।

8. प्रस्तुत शोण उपकरण (प्रश्नावली) –

किसी भी शोध कार्य के लिए दत्त संकलन आवश्यक होता है । इसके लिए शोधकर्ता ने ऐसी प्रविधियों का सहयोग लिया तो परिणाम व गुणों की दृष्टि से उपयुक्त तथा यथोचित संकलन में शोध कार्य के लिए सहायक है । शोधकर्ता ने अपने अनुसंधान के कार्य के लिए प्रश्नावली का प्रयोग किया है ।

वर्तमान शोध के लिए शोधकर्ता ने दत्त संतुलन हेतु जिस विधि या उपकरण का प्रयोग किया है उसे Research tool कहते हैं यह Tool निम्नलिखित है –

समायोजन सूची–

उपयुक्त शोध कार्य में समायोजन स्तर मापन हेतु आर.के.ओझा द्वारा निर्मित समायोजन सूची का प्रयोग किया जायेगा ।

शैक्षिक निष्पत्ति –

विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति जाँचने हेतु गत वर्ष की वार्षिक परीक्षा में विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त अंकों के आधार बनाया जायेगा । कक्षा 9 वीं व 10 वीं के अधिकतम अंकों में अन्तर होने के कारण दोनों कक्षाओं के प्राप्तांकों को लिया जायेगा ।

10 शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियां –

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा प्रदत्तों का कुशलतापूर्वक विश्लेषण एवं आंकड़ों को निश्चित रुप से सारणी में प्रकट करने हेतु मध्यमान, प्रमाप विचलन एवं टी–टेस्ट का प्रयोग किया जायेगा ।

11 संदर्भ ग्रन्थ सूची –

1. अस्थाना की "मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन"
2. भटनागर ए.बी. की "मनोविज्ञान और शिक्षा–शिक्षा में अनुसंधान"
3. राय पी.एन. की " अनुसंधान परिचय" ,लोयल बुक डिपो, मेरठ, (1999)
4. शर्मा ए.के. की " प्राथमिक स्तर के अध्यापकों की विज्ञान के प्रति अभिवृत्ति एवं विज्ञान शिक्षण दक्षता का अध्ययन" एम.एड. लघु शोध प्रबंध, म.द.स.विश्वविद्यालय, अजमेर (2000)
5. बुच.एम.बी. की " सैकण्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एज्युकेशन नेशनल, काउंसलिंग ऑफ रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग" बड़ौदा–इण्डिया (1972–78)